(जो) आएं बाप के पास, मात-पिता के पास वो अनुभव सुनाएं कि हम कैसे काँटे से फूल बन रहे हैं वा कैसे शूद्र वर्ण से ब्राह्मण वर्ण, फिर ब्राह्मण वर्ण से देवता वर्ण बनेंगे। यह रसम-रिवाज़ कल्प पहले भी ऐसे ही थी। और कोई भी जन्म में ऐसी बातें नहीं होती हैं। सतसंग किया, रामायण सुनाया, भागवत सुनाया, गीता सुनाई, फलाना सुनाई। जब गीता सुनाते हैं (तो) बड़े-2 मनुष्य, बड़े-2 विद्वान, सन्यासी वगैरह रहते हैं। बॉम्बे में एक चिन्मयानन्द है, हर वर्ष आते हैं और बहुत बड़े-2 आदमी जाते हैं। बच्चे जानते हैं कि इन सब विद्वानों की बुद्धि में सब ठीकरियाँ भरी हुई हैं। कुछ भी एम-ऑब्जेक्ट है नहीं तो सुनने वाले भी बस, 'वाह-वाह!' करते रहते हैं। समझ नहीं। यहाँ देखो, जो भी मिले उनको कैसे बताना चाहिए– भई, यहाँ काँटे से फूल बनाया जाता है, पतित से पावन बनाया जाता है और बाप से वर्सा ले रहे हैं। तो कैसे हमको परिचय मिला ; क्योंकि ज़रूर बच्चों को परिचय बाप से मिलता है। फिर बच्चे बाप का शो करते हैं। ऐसे नहीं कि बच्चे हों और बाप न हो, तो फिर क्या परिचय देंगे? किसका देंगे? (कविताः– .....प्यारा कौन बनेगा? हम बच्चे। बाबा का संदेश सुनाने घर-2 में घुस जाएँगे। दुनिया वाले कर न सकेंगे, हम करके दिखलाएँगे.....) बच्चों को बाप की समझानी ज़रूर देनी चाहिए। जैसे औरों को दी जाती है ना, (वैसे) इन बच्चों को भी। देखो, जीवात्मा। इसमें आत्मा है। ये आत्मा शरीर छोड़ देती है। इसको कहा जाता है (कि शरीर) मर जाता है, फिर आत्मा जाकर दूसरे शरीर में बैठती है। इस आत्मा का बाप है– परमात्मा। अब वो परमात्मा आया हुआ है। वो कहते हैं– मुझे याद करो, मैं वैकुण्ठ में ले चलूँगा। बच्चे, ये भी उन बच्चों को बच्चों ने सिखलाया तो भी ये पार हो जाएं ; क्योंकि इस अविनाशी ज्ञान का विनाश नहीं होने का है। तो इनका भी हक है। बाकी अच्छा, मजबूत सिखलाते जाना, सिखलाते जाना– शिवबाबा को याद करो, शिवबाबा को याद करो, तुम आत्मा हो, तुम्हारा बाप वो है, तुम बाप के घर से आई हो, ये पार्ट बजाती हो। ऐसे-2 मीठी-2 बातें बहुत सीखनी भी हैं। (भाई ने कहा– बाबा, वैसे भी यह धारणा करती है, जो बाहर का कुछ नहीं खाती-पीती ....) यह तो वण्डरफुल नॉलेज इनको मिलती है और फिर यह बैठ करके समझाएं, सुनाएँ; जैसे ये इन चित्रों पर भी समझाते हैं ना। क्या लाए है? नई कोई चीज़ लाए हैं? देखें हम। (बच्ची ने कहा– ये आपस में खाएँगे, बैठकर पिकनिक करेंगे।) ये फैमिली। कुटुम्ब जिसको कहा जाता है। कुल जिसको कहा जाता है। यह है ऊँच ते ऊँच। ऊँचे ते ऊँचा भगवत। फिर लॉ भी ऐसे कहता है कि ऊँचे ते ऊँचा भगवत यानी बाप। तो ज़रूर उनके बच्चे भी इतने ऊँचे ते ऊँचे होने चाहिए। यह समझ की बात है ना। हाँ, बरोबर बाप है स्वर्ग का रचता तो ज़रूर बाबा के बच्चे भी स्वर्ग में बहुत ऊँचे होंगे, ऊँचे ते ऊँचे पद वाले होंगे; क्योंकि ये हैं सब विचार-मंथन करने की बातें। तो ज़रूर ऊँचे होंगे। बरोबर ऊँचे थे। देखो, ये चित्र हैं उनके। उनकी राजधानी थी। ज़रूर ये राजधानी ऊँचे ते ऊँची और कलहयुग में फिर नीच ते नीच है। अभी ये कौन आया, कब आया, कैसे बताया? कोई नहीं जानते हैं। बाबा-2 तो कहते हैं ... परन्तु पता तो इन बिचारों को .....। सहज बात है और देखो, कोई नहीं समझते हैं। तो ऐसे कहा जाए कि माया कोई बड़ा ताला डाल देती है, बिल्कुल

बुद्धि कुछ काम की नहीं, पत्थरबुद्धि (बन गई है)। नाम भी गाया जाता है– पत्थरबुद्धि, अहिल्या बुद्धि। फिर पत्थर से पारस बुद्धि बन रहे हैं। तो बच्चों को कितनी खुशी होनी चाहिए। बस, इनसे बड़ा पोजीशन दुनिया में कोई का नहीं है और तुम्हारे जैसा भविष्य 21 जन्म में साहुकार कोई बन ही नहीं सकते हैं। भले इस समय में किसके पास कितना भी धन हो; परन्तु तुम्हारे आगे वर्थ नॉट ऐ पैनी है। तो बच्चों में हमेशा खुशी रहनी चाहिए ; परन्तु यह है ही मुआ-छुआ की भाँति। देही-अभिमानी बनो तो खुशी (और) उसी समय में देह-अभिमान बनो फिर कुछ न कुछ....जाता है। समझा ना। सेकेण्ड की बात होती है ना। सेकेण्ड में जीवनमुक्ति, सेकेण्ड में जीवनबंध। याद करेंगे तो नशा चढ़ेगा, भूले (तो) यह देखो! वण्डरफुल बच्चों ने जाना है, और कोई भी नहीं जान सकते हैं। बच्चे, किसको भी कहेंगे ना– यह नाटक है, सभी एक्टर्स हैं और ज़रूर यह कर्मक्षेत्र है। अभी ऐसे नहीं कहा कि जब(जहाँ से) आत्माएँ आती हैं ,वो कोई कर्मक्षेत्र है। नहीं, वहाँ तो सभी आत्माएँ (रहती हैं)। कर्मक्षेत्र कहा (ही तब) जाता है जबकि कोई पार्ट बजाना होता है। तुम भी सदैव हनुमान जैसे परिपक्व अवस्था में हो जाएँगे, हिलेंगे नहीं माया से। ड्रामा कहता है कि ऐसी अवस्था होनी है ज़रूर। हाँ बच्ची, ले आओ टोली। .....आओ, तुमको टोली खिलाऊँ। (म्यूज़िक बजा) मात-पिता और बापदादा का मीठे-2 स्वदर्शनचक्रधारी ब्राह्मण कुलभूषण बच्चों प्रति दिल व जान .....।

जिन्होंने जो कुछ भी ऐसी बात कह दी है ; अभी देखो, इसको महावीर (कह दिया)। बस, बहुत कह दिया कि ये महावीर है। महावीर तो हनुमान को भी कहते हैं। तो जैनी मत भी ऐसे, कोई जैन आया, उन्होंने आ करके यह सब दिखलाया– माथा का बाल काटेगा और रसम चल गई। अभी ड्रामा में रसम पहले से ही नूँधी हुई है, जो ऐसे आते हैं। पीछे ये बैठ करके कड़ा हठयोग (करेंगे)। सन्यासियों (में) भी कड़ा है। उन सब हठयोगों से– धरती में घुस जाना, उल्टा हो करके चलना, फलाना करना, इन सबसे जैनियों का जो है ना सन्यासियों में बाल निकालना, यह बिल्कुल गंदा है। ये बोलते हैं– सहन करना है ना। यानी भगवान से मिलने के लिए कुछ सहन करना है। तो देखो, ये सहन कराते हैं। अभी तुमको कोई सहन करने की थोड़े ही कुछ बात है। .....(तो जो) रसम चलाई, बच्चे कहेंगे– यह भी ड्रामा में है और फिर भी ऐसे ही आते ही रहेंगे। तो पास्ट में बच्चों (ने) जो कुछ भी सुना या जो कुछ भी हुआ– ये मुसलमान आए, ये औरंगजेब आए, ये फलाने आए , फिर से सब होंगे। ये औरंगजेब आया, अमृतसर में गोली चलाई, बन्दरों के अंदर कुछ नस्ल चलाया, ऐसे-2 करके। मालूम है तुम बच्चों को ना। फिर से सब होगा– ये काँग्रेस का, ये फलाना। तो हूबहू जो कुछ ड्रामा में होता है, भले तुम्हारा साक्षात्कार है। अच्छा, तुम बैठ करके भोग लगाती हो, तो ड्रामा में जो-2 भी है भोग वगैरह, सो ही होता रहता है। साक्षी हो करके एक्ट में ले आना होता है और देखना भी होता है। वो (जो) ड्रामा होता है, शूट करके फिर साक्षी होकर अपना ही खेल देखते हैं। यहाँ नहीं, यहाँ खेल भी खेलना है, साक्षी हो करके भी देखना है। यह है फिर सबसे वण्डरफुल। अच्छा, आओ बच्ची।

✶✶✶✶✶✶✶✶